मजलिस -2

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। अलहमदो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिक यौमिद्दीन।

कुरआने मजीद के पहले सूरे, सूरए हम्द की ये इब्तेदाई आयतें हैं जिसकी मैंने आपके सामने तिलावत की है उसकी इब्तेदा भी दूसरे सूरों की तरह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से है। उस अल्लाह के नाम से जो ''रहमान'' भी है और ''रहीम'' भी है। ज़ात एक है और वो ज़ात वह है कि हर इंसान अगर अपने विजदान और अपने ज़मीर की तरफ़ तवज्जो दे तो ख़ुद उसका विजदान और ज़मीर उस ज़ात का पता बता देगा। वो कि जो इस कायनात का पैदा करने वाला वो जो इस कायनात का ख़ल्क करने वाला वो जो इस कायनात के निज़ाम को संभालने वाला। वो कि जिसका हुक्म पूरी कायनात में जारी व सारी व नाफिज़ वो जो एक चींटी से लेकर बड़े से बड़े जानदार का रिज़्क मोहैय्या करने वाला। वो जो ''मालिकुल मुल्क'' वो जो ''अला कुल्ले शैइन क़दीरा वो वाहिद व यकता जिसकी तरफ़ हर इंसान के ज़मीर का इशारा। लोग कहते हैं कि अल्लाह के मानने की दलील क्या है? आप दुनिया में हैं या नहीं हैं? क्या दलील कि आप दुनिया में मौजूद हैं? अरे साहब इसके लिये भी दलील की ज़रूरत है, कि हम खुद समझ रहे हैं। तो मालूम हुआ कि विजदान ने आपको ये बताया कि आप हैं? उसी विजदान ने यह भी बता दिया कि कोई है कि जिसने पैदा करके आप को दुनिया में भेजा है। कुछ चीजें फ़ितरत की बिना पर इंसान को मालूम होती है उसकी फ़ितरत ख़ुद उसके वजूद को बताती है। फ़ितरत के कुछ तक़ाजे होते हैं और मैं उसकी पहचान आप की ख़िदमत में अर्ज़ करूं। यूँ बड़ा मुश्किल है समझना कि फ़ितरत का मुतालबा क्या है? और आदत का तक़ाजा क्या है। इसलिये कि बचपने से जिस माहौल में इंसान पलता है। जो मुसलमान बातें सुनता रहता है। जिसका वो आदी हो जाता है। उसमें और फ़ितरत के तक़ाज़े में वह नहीं कर पाता इसलिए कि ''अलआदतो कलफ़ितरतिस्सानियते'' आदत भी दूसरी फ़ितरत बन जाती है तो फ़ितरत के तक़ाजे और माहौल की बिना पर क्या चीज़ ज़हन में बैठ गयी है, इसमें फ़र्क करना बहुत मुश्किल होता है। मगर उसकी एक पहचान है और वो पहचान क्या है? ज़रा तवज्जो फरमाऐंगे आप, कि इंसान की आदतें बदलती रहती हैं। इंसान का माहौल बदलता रहता है। इंसान के हालात बदलते रहते हैं। आज जो आदतें हैं आपकी, आज जो माहौल है आपका, आज जो हालात हैं आपके, वो आज से सौ बरस पहले न थे। और अगर कोई बहुत पुरानी भी आदत हो जो सैकड़ों बरस से चली आ रही हो तो हज़ार बरस पहले न थी। दो हज़ार बरस पहले न थी। तो हालात जमाने के बदलने से बदल जाते हैं जो आज हालात हैं वो सौ बरस पहले नहीं थे। फिर यह कि आदत व माहौल व हालात किसी ख़ास सरज़मीन के साथ मख़सूस होते हैं। हिन्दुस्तान वालों के जो हालात हैं और जो माहौल है वो अफ़्रीक़ा का नहीं है और आस्ट्रेलिया के जो हालात व माहौल है वो अमरीका में नहीं है। और शुमाली अमरीका में जो है वो जनूबी अमरीका में नहीं है। तो मालूम हुआ कि आदत व हालात व माहौल। ज़माने का पाबन्द होता है ज़माना बदलने से या ज़मीन बदलने से माहौल बदल जाया करता है। लेकिन फ़ितरत न

हालात की पाबन्द है न माहौल की पाबन्द है न ज़माने की पाबन्द है न ज़मीन के ख़ित्ते की पाबन्द है। तो अगर आप को ये देखना है कि आदत का तक़ाजा क्या है और फ़ितरत का तक़ाज़ा क्या है। इसकी दो पहचानें हैं। पहले तो आप ज़माने के तूल में चले जायें और ज़माने के वरक़ को पलटते जायें जो वरक़ के बदलने से बदल जाये समझ जाइए कि वो माहौल और आदत है। और वर्क बदलते रहे तारीख के और वो शय क़ायम रहे तो समझिए कि ये आदत का तक़ाजा नहीं है ये तो फ़ितरत का मतालबा है जो ज़माने और माहौल के बदलने से नहीं बदलता। इसी तरह आप ज़मीनों के खित्तों को देखते चले जायें जो मुल्कों के बदलने से बदल जाये वो आदत होगी और मुल्क बदलते जायें और वो शय क़ायम रहे तो ये फ़ितरत होगी। सिगरेट तो आज आम है पी जाती है सभी पीते हैं। लेकिन आज से पचास बरस के और पीछे आप चले जायें तो हुक़्क़ा भी गायब नज़र आयेगा। आज आप देखें हर तरफ़ पी जा रही है सिगरेट लेकिन जब मैंने वरक़ बदले तारीख़ के और देखा कि एक दौर में न थी। तो मालूम हुआ कि ये आदत है, फितरत नहीं है। लेकिन प्यास हमेशा लगती थी। लेकिन भूक हमेशा लगती थी। कोई चीज़ अगर पसन्दीदा मिल जाये खुशी हमेशा होती थी कोई अगर तकलीफ़ पहुंच जाये। रंज हमेशा हुआ करता था। पसन्दीदा चीज़ पर मुस्कराहट हमेशा आया करती थी। रंज की चीज़ पर आंसू हमेशा निकला करते थे। लेहाज़ा मालूम हुआ भूक, प्यास, रंज, खुशी, आखों में आंसू आना,खुशी की बिना पर मुस्कुराहट आ जाना ये आदत की बिना पर नहीं या हालात की बिना पर नहीं या माहौल की बिना पर नहीं ये हैं फ़ितरत के मुतालबे जो जमीन व जमान की कैद से बलन्द हैं। न इसमें जमीन की कैद है न इसमें ज़मान की कैद है। तो आदत बदलती है फ़ितरत नहीं बदलती। जब वो ज़ात जिसने दुनिया को पैदा किया वो जो रब्बुल अरबाब है वो जो खालिके काएनात है। ये कोई तसव्वुर है जो किसी एक दौर में बाज़ ज़हनों में पैदा हुआ और फिर फैल के आम हो गया या विजदान व फ़ितरत का मुतालबा है? तो उसका फैसला आप यूँ ही कीजिए कि अगर अल्लाह का तसव्वुर ज़माने, हालात और माहौल के बदलने से बदलता हुआ नज़र आये। कभी था और कभी न था तो समझ लीजिये कि यह किसी ज़हन की पैदावार था, परोपगन्डे के ज़रीये उसको आम किया गया और ज़हनों को उसका आदी बना दिया गया। लेकिन अगर अवराक़े तारीख़ पलटते जायें और हर दौर में इंसान को ये तसव्वुर नज़र आये कि कोई पैदा करने वाला है कोई ख़ल्क करने वाला है किसी ने दुनिया का निज़ाम कायम किया है। अगर ये तसव्वुर हमेशा मिले तो ये, हमेशगी दलील होगी कि ये आदत के मुतालबे की बिना पर नहीं ये फ़ितरत के मुतालबे की बिना पर है। और मुतालब–ए–फ़ितरत के लिये दलील की ज़रूरत नहीं होती। भूक के लिए कोई दलील नहीं चाहिए कैसे दलील से साबित कीजिए कोई अफलातून अरस्तू आये वो दलील पेश करके साबित करे कि आप को भूक लगी है तो मानूँ। प्यास के लिए भी दलील की ज़रूरत नहीं होती। मुस्कुराहट आ जाने के लिये दलील की ज़रूरत नहीं होती। आंखों में आंसू आ जाने के लिये दलील की ज़रूरत नहीं होती। क्यों? ये फ़ितरत के मुतालबे हैं उनके के लिए दलील की ज़रूरत नहीं। तो जिस तरह फ़ितरत का हर मुतालबा दलील से बलन्द होता है उसी तरह ख़ालिक़े कायनात के सबूत के लिए मुझ से दलील न मांगो। अगर ये मुतालब–ए–फ़ितरत न होता तो दलील मांगते। जब तुम्हारा विजदान और तुम्हारी फ़ितरत खुद बताती है तो अब दलील की तलब गलत है। तुम्हारा दलील मांगना ही गलत है। खुद तम्हारा वजूद दलील है कि कोई मौजूद करने वाला भी है कोई पैदा करने वाला भी है

और ये आप हज़रात जिनकी नज़र गहरी और वसीअ है। मुझसे ज़्यादा जानते हैं कि चाहे दौरे तारीख़ हो चाहे दौरे माक़ब्ले तारीख़ हो। चाहे वो लोहे का ज़माना हो चाहे वो पत्थर का ज़माना हो चाहे किसी दौर को आप देख लें जब भी तारीख़ या माक़ब्ले तारीख़ के किसी शहर या किसी आबादी की आप खोज करते हैं और कोई नई आबादी हज़ारों बरस पहले की आप के सामने आती है तो वहाँ आप को माबूद मिलते हैं वहाँ आप को इबादतगाहें मिलती हैं और इबादतगाहों का वजूद दलील है कि किसी माबूद का तसव्वर मौजूद है। ये माबूद का तसव्वुर हर दौर में होना ये बताता है कि माबूद का तसव्वुर आदत की बिना पर नहीं है ये फ़ितरत के मुतालबे के बिना पर है सिर्फ़ इशारए फितरत है कि कोई पैदा करने वाला है जिसने कायनात को पैदा किया तो मैं इस सिलसिले में खुद अपने ऊपर ऐतेराज़ करके इसका जवाब देना चाहता हूँ। कहा जा सकता है कि जनाब आप तो कहते हैं कि अल्लाह क्या है ''वहदहु लाशरीका लहु'' वो अल्लाह कि जिसका कोई शरीक नहीं ''लैसा कमिसलहि शैअन'' उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं जिस्म, जिस्मानियत, तमाम इंसानी ख़साएस, तमाम मख़लूक़ात के सिफात, उन सबसे बलन्द है लेकिन जब पुराने खंडहर मिलते हैं तो उनमें माबूद और इबादत का तो तसव्वुर मिलता है साथ ही साथ कोई मुजस्समा भी मिल जाता है तो फ़ितरत का मुतालबा तो बुतपरस्ती है। इसलिए कि हर दौर में बुत मिले हर दौर में माबूद जो मिले उनमें मुजस्समे भी मिले। लेहाज़ा ये न कहिये कि तौहीद फ़ितरत का मुतालबा है। ये कहिये कि बुत परस्ती फ़ितरत का मुतालबा है। हमेशा बुत मिलते हैं, तरशे हुऐ, टेढ़े–मेढ़े जैसी–जैसी तरक्की होती चली गयी वैसी–वैसी सूरत शक्ल ज़रा बेहतर होती चली गयी। तो ये न कहिए कि तौहीद का तसव्वुर है फ़ितरत के मुताबिक, ये कहिए कि बुत परस्ती का तसव्वुर है फ़ितरत के मुताबिक। ज़रा तवज्जो फरमायें कि जो बात अर्ज़ करने जा रहा हूँ तो ख़ुसूसीयत दलील की क्या है कि वो तफ़सील बताती है और फ़ितरत का क्या अंदाज़ है कि वो तफ़सील नहीं बताती इजमाल बताती है, फ़ितरत तफ़सील नहीं बताती इशारे करती है। इसको मैं आपके सामने मिसाल दे कर वाज़ेह कर दूँ। एक बच्चा बतने मादर से बाहर आया। अभी न किसी स्कूल में पढ़ा है न अभी किसी कॉलेज में पढ़ा है। न किसी माहौल का वो आदी हुआ है। अभी बतने मादर से बाहर आया है लेकिन बतने मादर से बाहर आने के बाद उसकी फ़ितरत ने बताया कि भेजने वाला करीम है ये नामुमकिन है कि मुझे भेज दिया हो और मेरे लिए रिज़्क मुहय्या न किया हो। फ़ितरत के मुतालबे ने इसको बताया कि तेरा रिज़्क ज़रूर है। और अब इसने रिज़्क तलाश शुरू किया। मुंह फेर कर इधर–उधर ये क्या तलाश कर रहा है? ये राज़िक पर ऐतेमाद है और अपने रिज़्क की तलाश में इधर–उधर मुंह फेर रहा है तो फ़ितरत का इशारा था कि तेरे लिये रिज़्क मौजूद है लेकिन इधर–उधर मुंह फेरते–फेरते जो कपड़ा उसके पहलू में था वो मुंह में लग गया अब उसी को उसने चूसना शुरू कर दिया। कपड़ा चूस रहा है वो गया अब उसी को उसने चूसना शुरू कर दिया। कपड़ा चूस रहा है वो आप की उंगली पहुंच गयी वो उंगली चूसने लगा। और कभी–कभी उसी इजमाल से फायदा उठाने के लिए मांऐं आदी बना देती हैं चुसनी का। हर वक्त ये शोर मचाया करता था इसलिए इधर रोया और उधर मुंह में चुसनी दे दी। अब वो चूस रहा है तो फ़ितरत ने बताया था कि तेरा रिज़्क तो है मगर चूंकि इशारा था फ़ितरत का, इजमाल था तफ़सील न मालूम थी इसको कि रिज़्क कहाँ मिलेगा लेहाज़ा इसने धोखे खाये और गलत तौर पर अपने फ़ितरत के मुतालबे पर ग़लत तदबीर करने लगा। कभी उसने कपड़े को समझा कि उससे रिज़्क मिल जायेगा कभी चुसनी को समझा कि उससे रिज़्क मिल जायेगा क्यों? वो इस लिए कि ना फहम है फ़ितरत के

इशारे को सही मुंतबक़ न कर पाया। जिस तरह इंसान का बचपना और जवानी होती है उसी तरह इंसानियत भी बचपने और जवानी की मंजिलों से गुज़री है। इंसानियत के भी बचपन के कुछ दौर थे और कुछ जवानी के दौर थे इंसानों के बचपने और ना फ़हमी का दौर वो था कि जहाँ फ़ितरत ने इशारा तो किया कि तेरा कोई पैदा करने वाला है। लेकिन अपनी नाफ़हमी की बिना पर मुंतबक करने में इससे ग़लती हुई कभी आफ़ताब को समझा कि ये, कभी माहताब को समझा किये, कभी सितारों को समझा कि ये, यानी इशारे थे कि अल्लाह ग़ालिब व क़ाहिर है लेहाज़ा हैबतनाक को समझा कि ये होगा, इशारा था कि पैदा करने वाला करीम है लेहाजा अगर किसी जानवर से रहम व करम का मुज़ाहरा होने लगा समझा यही होगा वो राज़िक है। किसी जानवर से रिज़्क मिलने लगा वो समझा यही होगा। दरख्त के साये को देखा तो समझा यही होगा तो मालूम हुआ कि इशारा फ़ितरत का था कि वो राज़िक है, वो रब है, वो करीम है, वो क़हहार है, वो जब्बार है। अब सिफतों के मुंतबक करने में उससे धोखा हुआ कभी उसको समझा कभी उसको समझा। वो कबीर है वो अकबर है वो आला है, इसलिए हर उँची चीज़ पर उसका तसव्वुर चला गया कि यही अल्लाह होगा। यही मेरा ख़ालिक़ होगा।

मगर आप कह सकते हैं कि ये तो बचपने की बातें थीं अच्छा जब नाफ़हम था, बचपना था धोखा हुआ लेकिन जब इल्म आ गया जब फ़हम आ गया जब समझ आ गई अब क्यों नहीं पहचानता? तो मैं अर्ज़ करूंगा कि इसी दी हुई मिसाल पर दोबारा ग़ौर करें। इब्तेदा में जब बच्चा छोटा था महीने दो महीने का वो नहीं पहचानता था कि चुस्नी से मुझे ग़ेज़ा नहीं मिलेगी, धोखे में चूस्ता था। लेकिन माँ ने आदत डाल दी तो अब मुसीबत बन गयी वही चुसनी लाख छुड़ाना चाहते हैं वो छोड़ता ही नहीं अब जनाब तीन,चार, पांच बरस के भी हो गये मगर चुस्नी लटकी हुयी है। क्या अब भी नहीं जानता वो कि पेट नहीं भरेगा। अब वो जानता है कि इससे कोई फायदा नहीं लेकिन इतने दिनों की आदत अब छुटे नहीं छुटती। यानी चुस्नी का धोखा बाद में चुस्नी चुस्नी की आदत बन गया।

अब हम जानते हैं कि न पत्थर से फायदा है न दरख्त से फायदा है। अब जानते हैं कि ये जानवर हमारे ताबे हैं हम उनके ताबे नहीं हैं। लेकिन सदियों और मुद्दतों की आदत में अब भी सर झुकाये रहते हैं। उनके आगे हम अब भी सर झुका रहे हैं इसलिये कि आदत पड़ गयी है कैसे छोड़ दें।

बहरहाल मालूम हुआ कि बच्चा इब्तेदा में नहीं जानता था कि कहां से मुझे ग़ेज़ा मिलेगी इसलिए मां की आग़ोश ही है जो तरबीयत देती है कि तुझे इधर उधर से नहीं मेरे सीने से ग़िज़ा मिलेगी। मैं तेरे लिए परवरिश का ज़रीया हूँ मुझे तेरे लिये कुदरत ने मोहय्या किया है। ये माँ बताती है कि तेरी ग़ेज़ा मेरे सीने में है। तो मालूम हुआ कि सही राह बताने के लिए और फ़ितरत को गलत रास्ते से मोड़ने के लिये किसी मुरब्बी की ज़रूरत होती है। किसी तरबीयत करने वाले की हाजत होती है। कुदरत ने इसीलिए फ़ितरत की सही राहों को मोअय्यन करने के लिए अंबिया व मुरसलीन का सिलसिला क़ायम किया कि जहाँ फ़ितरत मुड़ने लगे हिदायत करके बताये कि सही रास्ता कौन है।

बहरहाल यही वो ज़ात है कि जिसकी तरफ़ हर एक का विजदान हर एक का ज़मीर इशारा करता है। और इमाम हुसैन (अ०) की मशहूर व मारूफ दुआ है। काश आजकल के उलमा जो रिसर्च व तहक़ीक करना चाहते हैं, जो हक़ायक़ को जानना चाहते हैं, काश वो हमारे आइम्मा–ए–मासूमीन (अ०) की दुआओं को लेलें। ये मैं इसलिये कह रहा हूँ कि हमें तो अपने जवाहेरात को परखने की तौफीक़ ही नहीं। हमें तो ये मालूम ही नहीं कि हमारे पास कैसे खज़ाने हैं और उनमें कैसे जवाहेरात हैं। हमें तो बस नावेलों से शौक है। हमें तो बस उन किताबों की तरफ़ तवज्जो है जो हमारे ज़मीर को मोड़ दे

इधर उधर। मैं कहता हूँ कि काश वो लोग जिन को ज़ौक़ व शौक है तहक़ीक़ का वो आकर देखें इमाम जैनुल आबदी (अ०) की दुआ में। अमीरूल मोमनीन अ० की दुआ में। इमाम हुसैन (अ०) की वो मशहूर व मारूफ दुआ–ए–अरफ़ा जिसमें आप फ़रमा रहे हैं कि ऐ पालने वाले, ऐ मेरे मालिक! मैं तुझे तेरे अलावा किसी दूसरी चीज़ के ज़रिए कैसे पहचानूं? क्या तेरे अलावा वो कोई दूसरी चीज़ तुझ से ज़्यादा ज़ाहिर है कि मैं उसके ज़रिए तुझको पहचानूं? ज़रिऐ अख़्तियार करने से तो रास्ता दूर हो जाता है। तुझ तक पहुंचने की राह दूर हो जाती है। तू खुदा वो नूर है कि तेरी मारेफ़त के लिए खुद तेरी ही ज़ात काफ़ी है तुझे किसी ज़रिए की ज़रूरत ही नहीं।

तो खुद इंसान का विजदान। इंसान का ज़मीर खुद उस ज़ात की तरफ रहनुमाई करने के लिए तैयार जिस ज़ात का हर ज़बान में नाम मौजूद होना दलील है कि हर कौम में ये तसव्वुर मौजूद है। दुनिया की कोई ज़बान पुरानी से पुरानी क़दीम से क़दीम आप देखें कि उसमें अल्लाह का कोई नाम है या नहीं? हर ज़बान में कोई न कोई नाम चाहे वो यज़दाँ हो। चाहे वो अंग्रेजी में (God)हो, चाहे वो परमात्मा हो, चाहे वो अल्लाह हो। अब और ज़बान मैं जानता नहीं। ये भी नहीं जानता हूँ ये सुनी हुयी लफ़्ज़ें हैं। मगर हर ज़बान में आपको उस ज़ात के लिये कोई नाम मिलकर बतायेगा कि हर कौम में तसव्वुर मौजूद था कि कोई पैदा करने वाला, कोई खालिक़ है। अब अरबी में इसी के लिये अल्लाह की लफ़्ज़ है तो अस्ल ये लफ्ज़ नहीं है। अस्ल वो ज़ात है जिसकी तरफ़ इशारा है लफ्ज़ अल्लाह से।

तो इरशाद हो रहा है बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अब ये खुसीसियत है कि इस्लाम ने मोमानियत कर दी कि देखो अपनी तरफ से अल्लाह का कोई नाम न रखना मैं खुद अस्माए इलाही को बता रहा हूँ। उसको पुकारना है तो उन अस्मा से पुकारो जो मैंने तुम्हें बता दिये हैं। अल्लाह के लिए बड़े अच्छे–अच्छे नाम हैं। तुम्हें अलग से नाम रखने की क्या ज़रूरत। अगर पुकारना है तो उन्हीं अस्माए हुस्ना के ज़रिए से। पुकारो। इस्लाम में अस्माए इलाही तो काफ़ी हैं यानी बस जो अल्लाह ने बताये हैं वही हैं अपनी तरफ़ से तुम्हें अल्लाह का नाम रखने का कोई हक़ नहीं है इसलिए कि तुम उसकी अज़मतों को पहचानते नहीं। इसलिए कि तुम उसकी बलन्दियों से वाक़िफ़ नहीं। मुमकिन है कि अदमे वाक़फ़ियत की बिना पर कोई नाम ऐसा रख दो जो ज़ाते इलाही की शान के लेहाज़ से गैर मुनासिब हो। तुम्हें क्या मालूम कि कौन कैसा है? तुम को तो अपने बच्चों के मुतअल्लिक भी नहीं मालूम होता कि ये कैसा होगा? तुम नाम रखते हो मगर तुम्हारा रखा हुआ नाम तमन्नाओं का मुज़ाहेरा होता है। जाहिल होने वाला होता है और आलिम नाम रख देते हो। फासिक़ व फ़ाजिर होने वाला होता है और आबिद नाम रख देते हो और झूठा होने वाला होता है और सादिक़ नाम रख देते हो। गैर मुत्तकी होने वाला होता है और मुत्तक़ी नाम रख देते हो क्यों इसलिए कि तुम्हे मुस्तक़बिल का हाल नहीं मालूम कि बच्चा कैसा निकलने वाला है। तो जब तुम अपने बच्चे को नहीं पहचानते तो अल्लाह की सही मारेफ़त क्या होगी! डर है कि तुम नाम रखो तो ना मुनासिब नाम न रख दो मैं बताता हूं कि मुझे किन नामों से पुकारो किस तरीके से अवाज़ दो।

दो तरह के नाम हैं एक है इस्मे ज़ात और कुछ हैं अस्माए सिफात। ज़ात का नाम है अल्लाह। वो ज़ात जो खालिक़ है जो राज़िक है जो रब है जो रहीम है जो करीम है जिसमें तमाम सिफाते कमाल पाये जाते हैं उस ज़ात का नाम है अल्लाह। कुल हुवल्लाहोअहद। कह दो वही है बस अल्लाह कि जो एक है। अजब अंदाज है सुर–ए–तौहीद का भी। ''कुल हुवल्लाहो अहद।'' कह दो वो अल्लाह अहद है। अल्लाह हुस्समद। वो अल्लाह जो बेनयाज़ है, जो किसी का मुहताज नहीं। लम यलिद वलम यूलद। न उससे कोई पैदा हुआ न वो किसी से पैदा हुआ। वलम

यकुन लहू कुफो वन अहद। और उसका कोई हमसर नहीं, उसका कोई बराबर वाला नहीं। कुल हो वल्लाह कह दो कि वो अल्लाह कौन है! अहद, है ये अजीब अंदाज़ है। मैं एक बात अर्ज़ कर रहा हूँ ज़रा इस पर तवज्जो फरमायें। ''हुआ'' ज़मीर है और ज़मीर के लिए ज़रूरत होती है कि पहले ज़िक्र आ जाये तब ज़मीर आये। मेरे पास फलाँ साहब आये थे नाम लिया मैंने मोहम्मद हुसैन साहब मसअलन। और उन्होंने ये कहा और उन्होंने ये कहा। पहले नाम आ गया उसके बाद ज़मीर ''उन्हू, उन्हूं, उन्हूं'' लेकिन नाम न आया हो जिक्र न आया हो और मैं ज़मीर फेरना शुरू करूं ''वो'' ''और'', ''उन''। तो आप कहेंगे ये कौन ''वो''? ये कौन ''उन''? तो पहले नाम होता है फिर ज़मीर आती है। मगर यहाँ क्या है? होना चाहिए था कुलहुवल्ला हो अहद कह दो अल्लाह वही अल्लाह एक है। मगर यहां क्या हो रहा है ''कुलहुवल्लाहु अहद'' कह दो वह अल्लाह एक है। ज़मीर पहले नाम बाद में। ये गोया फ़ितरते इंसानी का निचोड़ है जो कुल हुवल्लाह ने पेश किया। आप जब किसी चीज़ को बयान करना चाहते हैं तो ज़ात की जगह पर हमेशा आप ''वो'' आते हैं। हम और आप बैठे हैं मैं भी इंसान आप भी इंसान। आप ने पूछा जनाब इंसान क्या होता है? तारीफ़ इंसान की बता दीजिए। मैं तो पुरानी तारीफ़ बताउंगा मुंतखब में जो मैंने सुनी थी। अब क्या है मैं नहीं जानता। तो मैंने कहा कि ''इंसान वो हैवान है जो नातिक़ हो।'' नातिक़ क्या सूझ बूझ रखने वाला समझदार, फैसले करने वाला, ''वो हैवान जो नातिक़ हो'' तो क्या पहले वो आया फिर सिफ़त बयान की गयी कि जो नातिक़ हो। आप ने कहा नातिक़ होना सूझ बूझ और समझ रखना ये तो है सिफत ''यहां सब समझदार हैं ''तो सिफत ही तो हुई। नातिक़ होना सिफत है मैं तो ज़ात को पूछ रहा हूँ। ज़ात क्या है। वो हैवान।'' अच्छा तो शायद हैवान होगा। तो आपने पूछा ''हैवान क्या?'' तो मैंने कहा ''वो जिस्मे नामी कि जिस में हिस व हरकत इरादी पायी जाती हो। अब ये मैं पुरानी तारीफें कर रहा हूँ क्यों कि मैं नया इल्म जानता ही नहीं वो जिस्में नामी। बढ़ने वाला जिसमें नुमू पाया जाता हो जिस में हिस और हरकत भी पायी जाती हो अहसास हो दर्द का ग़म का रंज का भूक का और प्यास का और हरकते इरादी भी करता हो कि यहाँ है वहाँ चला गया वहाँ है वहाँ चला गया। तो वो जिस्मे नामी कि जिसमें हरकते इरादी पायी जाती हो तो हुज़ूर हरकत का पाया जाना न पाया जाना ये तो हुई सिफ़त, अब ज़ात क्या होगी तो मैंने कहा ''वो जिसमें नामी'' तो आपने पूछा ''जिसमें नामी क्या है'' तो मैंने कहा ''वो जिस्म कि जो बढ़ता हो।'' अभी इतना सा पौधा था फिर इतना हुआ फिर उतना हुआ। जिस्में नामी क्या वो। जिस्म जो बढ़ता हो। आपने कहा ''जिस्म क्या'' मैंने कहा कि ''वो मौजूद कि जिसमें तूले अर्ज़ उमक़ पाया जाता हो।'' लम्बाई, चौड़ाई गहराई का पाया जाना तो है सिफ़त। अब ''वो'' क्या मैंने कहा ''वो जौहर'' कहा ''जौहर क्या'' मैंने कहा ''जो क़ायम बिल ज़ात हो किसी चीज़ में होकर न पाया जाता हो'' जैसे रंग वगैरह खुद अपनी जगह पर हो। तो मालूम हुआ ''वो जौहर क्या?'' जो क़ायम बिल ज़ात हो ये भी सिफ़ते आपने कहा ''जौहर क्या?''कहा जी अस्ल में इस पूरी कायनात में इतने छोटे–छोटे होना ये भी सिफ़त। जमा हो जायें और उनसे जिस्म बन जाये ये भी सिफत। अब ज़ात कि जगह क्या आया। ''वो ज़र्रे''। ज़रे को आपने पूछा क्या? ''कहा जी एटम''। यानी वो जो अब से पहले कहा जाता था कि तक़सीम नहीं हो सकता छोटे से। अब कहा जाता है जी बट जाता है। मगर इसकी सिफ़त क्या है कि उसमें इलेक्ट्रान होता है और प्रोटान होता है और वो यूं गरदिश करता रहता है और बीच में यूं मरकज़ होता है। ग़र्ज कि आखिर में जब मैं पहुंचा कहा ऐसा कि जिसमें इस तरह के अजज़ा पाये जाते हों वो ऐसा कि जिस में एक मरकज़ हो वो ऐसा कि जिसके गिर्द ज़रीत

हरकत कर रहे हों तो मालूम हुआ ज़ात की जगह पर ''वो'' आ जाता है, बयान की जगह पर सिफत आ जाती है। तो ये है हद्दे इल्म आख़िर इंसान की ज़ात कि जगह पर ''वो''आ जाता है बयान की जगह पर सिफ़त आ जाती है। तो ये है हद्दे इल्म आखिर इंसान की ज़ात की जगह इशारा आ जाये बयान में सिफ़त आ जाये तो ख़ालिके़ कायनात तुम्हारे इल्म को समझता था उसने वहीं से इब्तेदा की कुल हुवल्लाहो अहद। वो है जो यकता है जो यगाना है जो बेनियाज़ है ''वो'' से ज़ात की तरफ़ इशारा है और फिर सिफ़त है जिन से पहचानिये।

उस अल्लाह के नाम से जो रहमान है जो रहीम है जिस की ज़ात में हर सिफ़त पायी जाती है। तुम ने अल्लाह की तस्वीरे बनायीं मगर कैसी–कैसी शक्लें बनायीं? कैसी–कैसी सूरतें बना दी भयानक तस्वीरें। अब मैं तफ़सील नहीं बयान करूंगा किसी को तकलीफ़ न पहुंचे लेकिन आपने ख़ुद ही देख लिया होगा। कैसी–कैसी शक्लें बनायीं अरे अल्लाह को पहचानना है तो अपनी बनायी हुई शक्लों से न पहचानो अल्लाह को पहचानना है तो उनके ज़रिए सिफाते इलाही समझ सकते हो जिनके ज़रिए पहचान सकते हो कि अब मख़लूक ऐसे हैं तो ख़ालिक़ कैसा होगा। जब पैदा होने वाले ऐसे हैं तो पैदा करने वाला कैसा होगा? अगर पहचानना है अल्लाह को तो उनको पहचानो जिनके सिफ़ाते कमाल आइन–ए–जमाल व जलाले इलाही है। जो इतने अल्लाह से करीब जो इतने अल्लाह से नज़दीक कि लबों को उनके हरकत है और नेदा आती है वमा यनतक़ि अनिल हव इल्ला वहयुन यूहा। लब उसके हिले मगर ये अपनी ख्वाहिश से नहीं बोला। जो मैंने वही कि थी वही उसने कहा। हाथों को उसके हरकत हुई मगर उसके हाथों को हरकत नहीं हुई ''मरामैता इज़ामैता वलेकिन्नल्लाहो रमी।'' हाथ पर उसके बैअत की निदा आयी। ''यदुल्लाहि फौक़ा अयदीहिम'' अरे ये रसूल का हाथ नहीं ये तो अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथों पर है। ऐसों को ज़रीआ बनाओ कभी वजहुल्लाह मिले कभी जुन्बुल्लाह मिले कभी ऐनुल्लाह मिले कभी उज़नुल्लाह मिले कभी लिसानुल्लाह मिले उनको देखते जाओ और अल्लाह को पहचानते जाओ। ऐसे बन्दे तो हों जिनके ऊपर खुदा का धोखा हो रहा हो समझ में नहीं आया कि अली (अ०) ने काबे में पैदा होते ही सजदा क्यों कर लिया? ये सजदा लोगों के लिये न था हिदायत का रास्ता बताना था अरे मैं पैदा होते ही माबूदे बरहक को सजदा कर रहा हूँ इसलिये कि मज़हरे सिफात व कमालाते इलाही हूँ। कहीं मज़हर को अस्ल न समझ लेना। कहीं मज़हर ही को माबूद न समझ लेना। लेहाज़ा पहले मैं सजदा कर लूंगा। ताकि मैं बताऊं कि उसको सजदा करो जिसको मैं खुद सजदा कर रहा हूँ।

एक बात और अर्ज़ करूँ। मशहूर व मारूफ वाक़ेआ है कि रसूल (स०) का सर ज़ानू पर और अली (अ०) इशारे से नमाज़ पढ़ रहे हैं और जब वही ख़त्म हुई और आंख खुली तो वक़्ते फ़ज़ीलतें अस्र का ख़त्म हो चुका था। अली (अ0) ने नमाज़ पढ़ी? कहा ''इशारे से'' फ़रमाया ''दुआ करो अभी आफ़ताब पलटे''। दस्ते दुआ बलन्द हुऐ डूबा हुआ आफ़ताब पलटा। ये था दौरे रिसालत और सिर्फ़ दौरे रिसालत ही नहीं बल्कि अब जा रहे हैं जंगे सिफ़्फ़ीन में और गुज़र हो रहा है ज़मीने बाबुल से अस्र का वक़्ते फ़ज़ीलत आता है, जवीर ये जो माअज़्ज़िन हैं, कहते हैं ''आज़ान कहुँ'' कहा ''नहीं इस ज़मीन पर अज़ाब आ चुका है, जिस ज़मीन पर अज़ाब आ चुका है, मैं उस पर नमाज़ नहीं पढ़ूंगा।'' ज़मीने बाबुल से गुज़रे अस्र का वक़्त ख़त्म, कहा अज़ान कहो। जवीरये ने हैरत से कहा कि कौन सी अज़ान मौला? अस्र का वक़्त चला गया मग़रिब का वक़्त अभी आया नहीं। कहा ''अस्र की अज़ान कहो अज़ान शुरु हुई, अली (अ0) ने दस्ते दुआ बलन्द किये डूबता आफ़ताब उभर कर सामने आया। अगर अबूतुराब के इशारे पर ज़मीन ज़रा अपनी गर्दिश बदल ले तो ताज्जुब क्यों करते हैं। अरे ये वो हैं कि

कायनात जिनकी ताबे। ये वो नहीं कि आपने इनकार कर दिया तो इमामत चली गयी, उनकी इमामत आपके मानने न मानने की ताबे नहीं है ये वो हैं जिनकी इमामत कायनात पर मुसल्लत है। ये उस नबी के नायब हैं जो रहमतुललिल्आलमीन था। अगर नबी रहमतुललिल्आलमीन था तो ये इमाम भी इमामे कायनात हैं न मानें अगर आप तो क्या हुआ? पूरी कायनात तो मानती है और अगर ये इमामे कायनात न होते तो फ़िर उनकी खुशी पर कायनात में खुशी न होती और उनके ग़म पर कायनात में ग़म न होता। मैं देखता हूँ कि ख़ुशी उनके यहाँ होती है और मुबारकबाद देने इंसान नहीं मलक आ रहे हैं। ये मलक मुबारकबाद देकर बताते हैं कि उसके घर बच्चा पैदा हुआ है जो हमारा भी इमाम है। हम मुबारकबाद दे रहे हैं। हुसैन (अ0) की विलादत हुई मलायका मुबारकबाद देने के लिये आ रहे हैं रसूल (स0) को एक मलक और दूसरा मलक और तीसरा मलक और सफ़ें मलायका की। सब मुबारकबाद दे रहे हैं। मगर ये रवायात अहले सुन्नत की किताबों में भी मौजूद हैं, और हमारे यहाँ भी कि उन्हें मुबारकबाद देने वालों में एक मलक आता है जो पहले मुबारकबाद देता है और फ़िर ताज़ियत अदा करता है। ''ऐ खुदा के रसूल (स0) ये आपका वो फ़रज़न्द है जो करबला में प्यासा शहीद हो जायेगा और अब मसायबे करबला और रसूल (स0) की आंखों से आंसू और घबरा कर उम्मेसलमा (अ0) का पूछना ''खुदा के रसूल! ये बच्चे की खुशी के मौक़े पर रोना कैसा?'' कहा ''अभी मलक आया था जिसने बताया कि मेरा यही बच्चा करबला में शहीद होने वाला है और ऐ उम्मेसलमा (रज़ी0) मुझे उस ज़मीन की ख़ाक भी दी है जहाँ ये बच्चा शहीद होने वाला है। ख़ाके करबला। देखो उम्मेसलमा (रज़ी0) ये अपने पास महफ़ूज़ रखना। जब तक ये ख़ाक–ख़ाक रहे समझना मेरा बच्चा ज़िन्दा है और जिस दिन ये ख़ाक ख़ून में बदल जाये समझना मेरा बच्चा शहीद कर दिया गया।'' यही वो ख़ाक थी जो जनाबे उम्मेसलमा (स0) के पास एक शीशी में महफ़ूज़ थी। कल मैंने अर्ज़ किया रवानगिये मदीना को हुसैन (अ0) मदीना छोड़ रहे हैं। आ रहे हैं लोग मिलने के लिये अबदुल्लाह बिन अब्बास आये अबदुल्लाह बिन जाफ़र आये मोहम्मदे हनफ़िया आये बीबीयाँ चलीं। जनाबे उम्मे हानी आयीं। फ़ुफी अमीरूलमोमनीन की बहेन ''ऐ बेटा। सफ़र मुबारक हो लेकिन कुछ दिन के लिये मुलतवी कर दो दो चार दिन के बाद चले जाना। ''क्यों फ़ुफ़ी? क्यों सफ़र क्यों मुलतवी कर दूँ? कहा ''बेटा देखो, हम बनीहाशिम का क़ायदा ये है कि जब कोई मुसीबत आने वाली होती है तो जिनों की औरतों की रोने की आवाज़ आती है ऐ बेटा जब तुम्हारे नाना का साया उठने का था तब भी जिन्नातों की औरतों की रोने की आवाज़ आयी थी जब तुम्हारी माँ दुनिया से गयीं तब भी नौहे की आवाज़ सुनी थी। और जब तुम्हारे बाबा का दुनिया से गुज़र हुआ और शहादत हुई तब भी मैंने जिन्नात की औरतों को रोते सुना था और जब तुम्हारे भाई हसन (अ0) ने दुनिया से कूच किया तब भी और ऐ बेटा तीन दिन से में सुन रही हूँ कि कुछ बीबीयों की जो दिखाई नहीं देतीं वो नौहा कर रही हैं कि अरे मदीना हुसैन (अ0) ने क्या छोड़ा कि रौनक़े मदीना उजड़ गयी जिन्नात की औरतों की रोने की आवाज़ आ रही है। बेटा दिल धड़क रहा है कहीं कोई मुसीबत तो नहीं आने वाली है पंजतन में अकेला तुम्हारा दम रह गया है। ऐ बेटा अगर तुम न रहे तो ज़मीन पंजतन से ख़ाली हो जायेगी।'' समझाया जनाबे उम्मेहानी को। जनाबे उम्मेहानी रुख़सत हुईं कि अब बूढ़ी नानी कि जिन के लिये कल अर्ज़ किया मैंने कि गोद में पाला जो हमेशा अहलेबैत (अ0) की वफ़ादार रहीं जो हमेशा अहलेबैत की जाँनेसार रहीं। जंगे सिफ़्फ़िन के मौक़े पर अमीरूल मोमनीन को अपने फ़रज़न्द (वो फ़रज़न्द जो साबिक शौहर से

थे) के हाथ ख़त भेजा था जनाबे उम्मेसलमा (रज़ी0) ने कि " मौला अगर रसूल (स0) बिठा न गये होते घर में और हुक्म न दे गये होते कि घर से न निकलना तो मैं खुद आपके साथ आती लेकिन मैं तो मजबूर हूँ।" और ये फ़रज़न्द उस अली पर निसार हुआ और अपनी जाँ निसारी की, ऐसी हमेशा अहले बैत (अ0) की फ़ेदाकार बीबी जिस ने हुसैन (अ0) को गोद में खिलाया अब वो आई। "बेटा!खुदा सफ़र मुबारक करे मगर बेटा देखो हर तरफ़ जाना कूफ़े का रूख न करना।" कल मैं पढ़ चुका हूँ मैं आगे मतलब बढ़ाने के लिये अर्ज़ कर रहा हुँ। तुम्हारे नाना से सुना है कि मेरा बच्चा कूफ़े के क़रीब एक ज़मीन पर शहीद किया जायेगा जिसका नाम "करबला" होगा कहा नानी "मैं भी जानता हुँ जैसा मैंने कल अर्ज़ किया इशारा किया ज़मीने करबला बलन्द हुई और एक मरतबा उम्मेसलमा को ज़ियारत कराई और उसके बाद रवायत की लफ़्ज़ें हैं कि हाथ बढ़ा कर ख़ाक की चुटकी उठाई और कहा "नानी उस ख़ाक को भी वहीं रख लिजिये जहाँ नाना की दी हुई ख़ाक मौजूद है।" तो अब दो निशानियाँ उम्मेसलमा (अ0) के पास। एक रसूल (स0) की दी हुई। और एक हुसैन (अ0) की दी हुई। इधर हुसैन (अ0) मदीने से चले और उधर उम्मेसलमा का आलम क्या? कि जब दिल घबराया मालूम नहीं मेरे बच्चे पर क्या गुज़री आयीं देखा वहाँ जहां ख़ाक रखी है देखा ख़ाक, दिल संभल गया, मेरा बच्चा ज़िन्दा है, मेरा हुसैन (अ0) ज़िन्दा है, ख़ाक –ख़ाक है यहाँ तक कि मोहर्रम की पहली तारीख़। अरे उस चांद के साथ न मालूम दिल पर क्या गुज़री कि घबरा कर आयीं बजाये किसी चेहरे देखने के ख़ाक देखी देखा अभी ख़ाक ख़ाक है। फिर संभल गया दिल। दूसरी आयी फ़िर देखा। दिन गुज़रते रहे ख़ाक की ज़ियारत करती रही जैसे आप ताज़ियेखाने की ज़ियारत करते हैं उम्मेसलमा (अ0) ख़ाके करबला की ज़ियारत कर रही हैं यहां तक की दिन गुज़रते–गुज़रते आशूर का दिन आया। सुबह को देखा शीशे में ख़ाक फरमाती हैं नमाज़े ज़ोहर के बाद आँख लग गयी थी अब जो सोयीं तो देखा रेसालत माआब (स0) आये हैं इस तरह की सर के बाल खुले हुऐ आंखों से आंसू बहते हुए हाथों में शीशे जिसमें खून उबलता हुआ "ऐ खुदा के रसूल (स0) ये सर के बील क्यों खुले हुऐ हैं? ये सर पर ख़ाक कैसी? अरे ये शीशे कैसे जिनमें खून है और ये रो क्यों रहे हैं?" कहा " उम्मेसमलमा (अ0) तुम्हें खबर नहीं अभी करबला से आ रहा हूँ।" गोया बताया मेरा बच्चा मेरे सामने ज़िब्हा कर दिया गया। मैं देख कर तड़प रहा था हुसैन के गले पर छुरी चलती रही। "ऐ उम्मेसलमा अभी करबला से आ रहा हुँ। एक शीशे में हुसैन का खून है, एक में अंसारे हुसैन का खून है।" ये ख़्वाब देखा आँख खुली घबरा कर वहाँ आई जहाँ ख़ाके करबला थी अब जो देखा तो बजाये खाक के खूने ताज़ा जोश मार रहा है ज़मीन पर बैठ गयीं "मदीने की औरतों अरे मेरा बच्चा करबला में शहीद कर दिया गया। ऐ बीबियों आओ मुझे आन के हुसैन का पुरसा दो, मेरा बच्चा करबला में क़त्ल कर दिया गया।" मैं कहता हूँ ऐ उम्मुलमोमनीन,ऐ ज़ौजऐ रसूल (स0) सब्र कीजिए आपने खाली शीशे में खून देखा है अब ज़रा ज़ैनब (स0) के दिल की ख़बर लीजिए कि देख रही हैं कि नोके नैज़ा पर सरे हुसैन (अ0) बलन्द है। आवाज़ आ रही है।

अला क़ोतलल हुसैनो बे करबला
अला ज़ोबेहल हुसैनो बे करबला

(पेज न0 15 का बाक़ी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)
वाले मिल गए होते और आप को भी "यज़ीद" से लड़ना पड़ता जो "बैअत" या वध के सिवा किसी तीसरी अवस्था को स्वीकार ही न करता, जो मुसलमान क़त्ल होने वालों के दफ़न किए जाने की अनुमति न देता, जो खुले आम यह कहता कि " बनी हाशिम" यानी हज़रत पैग़म्बर (स०) साम्राज्य बनाने का खेल खेले, न कोई फ़रिश्ता उनके पास आया और न कोई "वह्य" अवतरित हुई, तो इमाम हसन (अ०) भी वही करते जो इमाम हुसैन (अ०) ने किया।